अर्हम्

आगम मंथन प्रतियोगिता–**IV** ('आत्मा का दर्शन' ग्रंथ पर आधारित)

✤उत्तर–तालिका✤

:: आयोजक::

जैन विश्व भारती, लाडनूं

मंथन I (वस्तुनिष्ठ)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	द	113
2.	ब	169
3.	स	194
4.	अ	262
5.	अ	635
6.	अ	153
7.	ब	188
8.	ब	62
9.	ब	43
10.	अ	203
11.	अ	75
12.	स	217
13.	द	99
14.	ब	448
15.	स	193
16.	द	439
17.	ब	244
18.	अ	150
19.	अ	22
20.	ब	205

मंथन II (सही–गलत चयन)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	X	255
2.	X	160
3.	✓	181
4.	X	140
5.	✓	218
6.	X	356
7.	✓	324
8.	X	168
9.	X	289, 362
10.	X	330
11.	X	147
12.	✓	235
13.	X	176
14.	✓	145
15.	✓	166
16.	✓	170
17.	✓	219
18.	X	270
19.	✓	215
20.	X	303
21.	✓	377
22.	✓	25
23.	X	420
24.	X	36
25.	X	338

मंथन III (रिक्त स्थान पूर्ति)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	आत्मसिद्धि	213
2.	कर्मजन्य	157
3.	निर्भ्रान्त, सम्यक्त्व	242, 680
4.	संलेखना	347
5.	प्रथम	27
6.	चित्तवाला	166
7.	अइरित्ते	221
8.	सत्य	134
9.	लोकैषणा	315
10.	अस्थिग्राम	54
11.	पुद्गल	362
12.	दृष्टि	348
13.	आलंबन	534
14.	औषध	505
15.	भर्तृहरि	263
16.	आत्मा	359
17.	भद्दिया	64
18.	फल	372
19.	चिरसंगिनी	229
20.	स्यादवादीश!	162

मंथन IV (गलती सुधार)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	बौद्धिक	202
2.	–	110
3.	हेतु	141
4.	चौथे	235
5.	मात्रा भेद	220
6.	अशाश्वत	458
7.	ज्ञान	551
8.	विनयशीलता	691
9.	गुणों	653
10.	अंतिम	165
11.	अपेक्षित	236
12.	भी	580
13.	आत्मा	672
14.	समता	186
15.	शांत	280
16.	दूसरा	187
17.	क्षत्रिय	28
18.	349	106
19.	ज्ञायक	655
20.	जिजीविषा	190

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं –

10.	आठवां	192
20.	प्रमाद	232

मंथन V (संख्या–उत्तर)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	14	169
2.	7	245
3.	7	309
4.	13	48
5.	6	433
6.	15	259
7.	10	78
8.	8	6 (भू), 123,
9.	6	329
10.	4	206
11.	5	288
12.	48	346
13.	7	380
14.	80	258
15.	20	14
16.	6	349
17.	22	9 (भू)
18.	4	51
19.	9	249
20.	6	367
21.	49	26
22.	8	399
23.	5	269
24.	339	38
25.	350	95

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं–

2.	2	627

मंथन VI (कौन हूँ मैं?)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	तीर्थंकर	191
2.	मूर्त	609
3.	पुरुषार्थ	256
4.	भगवान् महावीर	128
5.	आत्मा	268
6.	लकीर	340
7.	प्रमाद	210
8.	वाणी	176
9.	शल्य	281
10.	कर्म	352
11.	मेघ	138
12.	जीसस	222
13.	भावना	307
14.	भगवान महावीर	85
15.	बुद्धिवाद	180
16.	चित्त	304
17.	तृष्णा	663
18.	गुरु	293
19.	शब्द	603
20.	मन	197
21.	मन	129
22.	जिज्ञासा	265
23.	ज्ञाता	654
24.	प्रवृत्ति	254
25.	मोक्ष	352
26.	कर्ता	487
27.	परिधि	182
28.	आदमी	299
29.	आशा	339
30	शरीर	450

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं–

6.	बिल	357

मंथन VII (वर्ण 'म' से प्रारंभ)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	ममत्व	252
2.	मन	302
3.	मरुदेवा	31
4.	मइमं	317
5.	मरणकाल	56
6.	ममत्वं	194
7.	मन	145
8.	ममत्व	414
9.	मद	519
10.	मन	142
11.	महावृक्ष	680
12.	मन्यते	332
13.	—	358
14.	ममत्व	670
15.	मनोज्ञ	176
16.	मणि	548
17.	महावीर	155
18.	महावीर	409
19.	मनोगुप्ति	535
20.	मनुष्य	743

मंथन VIII (वर्ण 'र' पर समाप्त)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	शरीर	133
2.	श्रृंगार	199
3.	निर्वैर	274
4.	श्रीधर	37
5.	खीर	55
6.	मिताहार	257
7.	–	105
8.	कल्याणकर	317
9.	शरीर	94
10.	निरुत्तर	177
11.	भीतर	341
12.	मेघकुमार	499
13.	तलवार	610
14.	उत्तरोत्तर	570
15.	अनुत्तर	262
16.	अनुत्तर	223
17.	श्रेयस्कर	574
18.	शतद्वार	619
19.	चार	521
20.	अस्थिर	186
21.	चराचर	277
22.	सार	530
23.	आहार	694
24.	हजार	720
25.	उदुम्बर	690

मंथन IX (पंक्ति पूरी करो)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	झीणी तजी न जाय	178
2.	कबिरां सुमिरन सार है	260
3.	रोग बढ़ा	300
4.	उतनी मानसिक निर्मलता है	224
5.	सब आभरण भार हैं	487
6.	वह प्रदेश धर्म है	633
7.	इयरा इयरा भणिया	750
8.	अहिंसा का प्रयोग हो ही नहीं सकता	133
9.	और एक की पूजा में सबकी पूजा होती है	709
10.	पर घृणा किसी के लिए नहीं	332
11.	द्वेष से भी मुक्त होना है	144
12.	अधार्मिकों का सोना श्रेयस्कर है	670
13.	ज्ञानी वह होता है जो अपने को जानता है	275
14.	करी कपट मन चोर	328
15.	सिद्ध वे होते हैं	264
16.	मुक्ति संप्रदायों में नहीं है	364
17.	उसने लोभ का नाश कर दिया	141, 664
18.	कबीरा मन निर्मल भया	304
19.	किन्तु कृत की प्रधानता है	172
20.	ऋण देने में ऋणदाता	615
21.	जहां पदार्थासक्ति नहीं होती	138
22.	वह खुदा की बात करे	154
23.	मानसिक प्रियता उत्पन्न करती हैं	176
24.	पायो नित्य विहार	178
25.	अनुभूति के आधार पर उसे परखना भिन्न बात है	147

मंथन X (कथन)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा।	254
2.	श्राविका जयंती ने भगवान् महावीर से कहा।	316
3.	कुलपति ने महावीर से कहा।	53
4.	सूअर ने इन्द्र से कहा।	172
5.	अनाथी मुनि ने सम्राट श्रेणिक से कहा।	310
6.	मुनि मेघ ने भगवान महावीर से कहा।	9 (भू), 126
7.	अष्टावक्र ने राजा जनक से कहा।	360
8.	भगवान महावीर ने गौतम स्वामी से कहा।	234
9.	नमक के पहाड़ वाली चींटी ने चीनी के पहाड़ वाली चींटी से कहा।	383
10.	श्रमण भगवान महावीर के षिष्य रोह अनगार ने भगवान महावीर से पूछा।	5
11.	बुद्ध ने आनंद से कहा।	335
12.	स्थविर नागसेन ने राजा मिलिन्द से कहा।	273
13.	संत ने थानेदार से कहा।	312
14.	सूफी साधक वायजीद के आदमी ने युवक से कहा।	368
15.	नमक के ढ़ेर वाली चींटी ने चीनी के ढ़ेर वाली चींटी से कहा।	146
16.	बुद्ध ने षिष्य आनंद से कहा।	214
17.	मृगापुत्र ने अपने माता–पिता से कहा।	276
18.	महाराज जनक ने संत से कहा।	343
19.	त्रिशला ने राजा सिद्धार्थ से कहा।	41
20.	संत ने बहिन से कहा।	192
21.	सूफी साधक ने अपनी पत्नी से कहा।	311
22.	गोशालक ने बालतपस्वी वैश्यायन से कहा।	69
23.	भद्रा ने सार्थवाह धन से कहा।	563
24.	प्रदेशी राजा ने कुमार श्रमण केशी से कहा।	430
25.	महावीर ने संगम से कहा।	77

मंथन XI (वन–वर्ड)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	विकथा	230
2.	शतयामा	129
3.	प्रत्यमित्र	23
4.	त्रिलोकी	128
5.	ब्रह्मचर्य	330
6.	भव्य	397
7.	पंकज	124
8.	कर्मारशाला	65
9.	अध्यवसाय	132
10.	दम	415
11.	मेढी	472
12.	तालपिशाच	394
13.	अहिंस्र	131
14.	गुणस्थान	237
15.	विचिकित्सा	467
16.	उद्वर्तना	612
17.	भोगामिष	657
18.	अनापात	707
19.	मुधाजीवी	702
20.	व्यवहार	493

मंथन XII (जोड़ी मिलाओ)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	खुजली	171
2.	समुद्र	308, 409, 557, 715, 722, 728
3.	बाड़	285
4.	सर्वार्थसिद्ध	156
5.	श्रावस्ती	118, 333,
6.	ऐन्द्र	45
7.	धर्म	151
8.	मोक्ष	323
9.	पेढ़ाल	72
10.	वसुमती	407
11.	समुद्र	272
12.	अशरीरी	652
13.	जातिस्मृति–ज्ञान	131
14.	भंडारी	658, 659
15.	कायोत्सर्ग	711
16.	पद्मासन	197
17.	क्षायिक	741
18.	जड़	268, 316
19.	अभव्य	73
20.	सेनापति	164, 729
21.	साधक	234, 273, 274, 284, 309, 349
22.	दृष्टास्रव	231
23	शुद्ध	241, 742
24.	रत्नत्रयी	237
25.	संकल्प	216
26.	शब्दाश्रयी	246
27.	आज्ञा	222
28.	सिद्ध	252
29.	आचार्य कुंदकुंद	270
30.	परिणमन	3, 643, 647,735

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं–

	उत्तर	पृष्ठ संख्या
2.	साधक	255
15.	साधक	303, 667
17.	शुद्ध	241
18.	परिणमन	3, 643, 647, 735
21.	(I) कायोत्सर्ग	259
	(II) समुद्र	662
	(III) शुद्ध	222
23.	(I) सिद्ध	603
	(II) साधक	252
27.	(I) धर्म	529
	(II) साधक	292
30.	जड़	268, 316

मंथन XIII (संबंध–बताओ)

क्र. सं.	उत्तर		(संबंध)	पृष्ठ संख्या
1.	राज्य	–	राजा	281
2.	भाई	–	भाई	328
3.	पुस्तक	–	लेखक	243, 376
4.	पुस्तक	–	लेखक	332
5.	दामाद	–	श्वसुर	366
6.	बहू	–	सास	327
7.	लेखक	–	पुस्तक	381
8.	माता	–	पुत्र	35, 36
9.	पत्नी	–	पति	6 (भू), 123
10.	पत्नी	–	पति, माता–पुत्र	57
11.	ननद	–	भाभी	46
12.	भानजा	–	मामा	70
13.	पुत्र	–	पिता	99
14.	बहिन	–	बहिन	30
15.	गुरु	–	षिष्य	108
16.	राज्य	–	राजा	511
17.	पौत्री	–	दादा	46
18.	पति	–	पत्नी	405
19.	कार्य	–	कारण	97
20.	पुत्र	–	पिता	449
21.	पुत्र	–	पिता	508, 509
22.	भाई	–	भाई	61
23	दामाद	–	श्वसुर	406
24.	नाना	–	दौहित्र	570, 571, 573,
25.	षिष्य	–	गुरु	509

मंथन XIV (मात्रा लगाओ)

क्र. सं.	उत्तर	पृष्ठ संख्या
1.	बंधनों का संपूर्ण विलय चौदहवें गुणस्थान में होता है।	173
2.	कर्म की गति बड़ी विचित्र है।	251
3.	वैशाली और वाणिज्यग्राम के मध्य गंडकी नदी बहती थी।	70
4.	'सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला'	290
5.	कार्य कारण से विलक्षण भी हो सकता है।	94
6.	लाभ से लोभ बढ़ता है।	413
7.	जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई।	552, 665
8.	मिथिला जल रही है, उसमें मेरा कुछ भी नहीं जल रहा है।	664
9.	जीव का लक्षण उपयोग है।	727
10.	खरगोश मेरे पैर से कुचला न जाए।	132
11.	जो डरता है उसे भूत पकड़ लेते हैं।	189
12.	आत्मा की एकत्व अनुभूति में हिंसा का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है।	190
13.	'भोगों को हमने नहीं भोगा किन्तु भोगों ने हमें भोग लिया है।	345
14.	चक्षुष्मान् को प्रकाश देने के लिए एक दीपक भी काफी है।	482
15.	अविनीत के विपत्ति और विनीत के सम्पत्ति होती है।	518
16.	वेश श्रामण्य का मानदण्ड नहीं होता।	696
17.	परनिमित्तक अर्थात् मन और इन्द्रियों की सहायता से होनेवाला ज्ञान।	743
18.	जो मन राखे जतन करि, तो आपे करता होई।।	145
19.	सामायिक—काल में श्रावक श्रमण के समान हो जाता है।	693
20.	ज्ञान हिताहित का विवेक देता है।	209

मंथन XV (वर्ग पहेली)

क्र. सं.	बायें से दायें (उत्तर)	पृष्ठ संख्या
1.	अंडज	7
3.	ऋण	615
5.	राजमाष	25
6.	यम	192
8.	भरत	30
9.	निशल्य	281
10.	तैजस	324
12.	नाव	557
13.	अमीबा	326
14.	संमोह	196
16.	परिताप	457
18.	धर्म	727
19.	नय	743
21.	पताका	455
22.	नक्षत्र	249
24.	संशयित	719
26.	कपिल	411
28.	आरंभ	216
29.	काल	727
30.	प्रमाण	243
31.	संयम	350

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं–

12.	(1) णावा	56
	(2) नावा, नावं	533
29.	धर्म	731

क्र. सं.	ऊपर से नीचे (उत्तर)	पृष्ठ संख्या
1.	अंकुर	128
2.	जरायुज	7
3.	ऋषभ	27
4.	भौम	428
6.	यतना	255
7.	अशरण	543
11.	समाधि	298
13.	अपराजिता	306
15.	मोहायतन	141
16.	परिमाण	463
17.	कर्म	151
18.	धन	23
20.	चारित्र	265
23.	क्षपक	236
24.	संवर	729
25.	आकाश	731
27.	लक्षण	393
28.	आगम	493

नोट : अग्रांकित विकल्प भी मान्य किए गए हैं–

25.	अधर्म	727

मंथन XVI (अन्त्याक्षरी)

	(उत्तर)	पृष्ठ संख्या
1.	सुभावित	714
2.	तम्हा	722
3.	हाकार	27
4.	रहित	52
5.	तप	161
6.	परिणेति	408
7.	तिन्दुक	400
8.	कपूर	465
9.	रस	537
10.	समा	662
11.	मारइ	667
12.	इय	699
13.	यतना	701
14.	नास्तिक	204
15.	कदम	285

मंथन XVII (अर्थ लिखो)

	(उत्तर)	पृष्ठ संख्या
1.	जो अधिक खाता है, वह योग की साधना नहीं कर सकता।	143
2.	कामार्त्त और मत्त व्यक्तियों के स्वप्न अयथार्थ होते हैं।	168
3.	अज्ञानी क्या करेगा? वह श्रेय और पाप को कैसे जानेगा?	247
4.	आज्ञा में मेरा धर्म है।	212
5.	पृथ्वी चित्तवती/सजीव होती है।	6
6.	धर्म से हीन जीवन पशु तुल्य है।	225
7.	किए हुए कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ता है।	162
8.	ऊर्जा का क्षीण होना मृत्यु है और उसका संरक्षण जीवन है।	325
9.	मनुष्य जाति एक है।	403
10.	सत्य को उपलब्ध पुरुषों की संगति क्या नहीं करती है?	266
11.	'जो पूर्ण है, जिससे उत्पन्न हुआ है वह भी पूर्ण है। पूर्ण से पूर्ण निकाल लेने पर भी वह पूर्ण कम नहीं होता। प्रत्युत जितना है उतना ही रहता है।	180
12.	भगवान महावीर ने समता धर्म का प्रतिपादन किया है।	390
13.	मिट्टी के दो गोले हैं– एक गीला और दूसरा सूखा। दोनों भींत पर फेंके गए। जो गीला था वह चिपक गया। जो सूखा था, वह स्पृष्ट होकर नीचे गिर गया।	564, 339
14.	जो एक को (आत्मा को) जानता है, वह सबको जानता है।	198
15.	कर्म शुभ हो या अशुभ, आत्मा के लिए दोनों ही बंधन हैं।	171